DATE 8.4.24
PAGE 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 बड़े भाई साहब) लेखक- प्रेमचंद
पुस्तक- नवतरंग भाग-8 भाग-1

प्यारे बच्चो, सुप्रभात।

आज हम कक्षा आठवीं की हिंदी साहित्य की पुस्तक नवतरंग-8 के पाठ-2 'बड़े भाई साहब' जोकि पृष्ठ-7 पर दिया गया है, का अध्ययन करेंगे।

पाठ आरंभ करने से पहले कुछ ज़रूरी जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। इस पाठ के लेखक मुंशी प्रेमचंद हैं जिन्होंने इस पाठ के माध्यम से पुरातनपंथी शिक्षा व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। उनकी कहानियाँ सामाजिक समस्याओं पर आधारित हैं।

कहानी में छोटे भाई बने लेखक मुंशी प्रेमचंद ने कहानी के आरंभ में अपने बड़े भाई के बारे में बताया कि मेरे भाईसाहब उनसे पाँच साल बड़े थे, लेकिन केवल तीन दरजे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था, जब मैंने शुरू किया था; लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वेजल्द-बाज़ी से काम लेना पसंद न करते थे। एक साल का काम दो साल में करते थे। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बड़े भाई कक्षा पास न कर पाते थे।

लेखक की उम्र उस समय नौ साल थी और उनके बड़े भाई साहब चौदह साल के थे। वे लेखक पर दूरी निगरानी रखते थे। यह उनका जन्मसिद्ध अधिकार था। मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ। वे स्वभाव से

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-2 'बड़े भाई साहब') लेखक प्रेमचंद

बड़े अध्ययनशील थे। हमेशा किताब खोले बैठे रहते। समय तथा दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द तथा वाक्य को दस-बीस बार लिख डालते। वहीं दूसरी ओर लेखक का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाते। खेल-कूद करके जब लेखक वापस आते तो भाईसाहब का रौद्र रूप देखकर प्राण सूख जाते। उनका पहला सवाल होता - कहाँ थे? हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मुँह से यह बात क्यों न निकलती कि ज़रा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है।

लेखक के भाई साहब निरन्तर पढ़ने में विश्वास रखते थे, वहीं लेखक बने छोटे भाई का मन खेलों में ज़्यादा लगता था। बच्चो, अब मैं पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ना आरंभ करती हूँ। लेखक के बड़े भाई उन्हें कहते हैं -

इस तरह पढ़ोगे, तो ज़िंदगी भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आएगा। मैं तो कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है। तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी जाते देखा है? रोज़ ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 8.4.24
PAGE 3

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 'बड़े भाई साहब') लेखक-प्रेमचंद

हमेशा पढ़ता रहता हूँ, उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ फिर तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे? अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपए क्यों बरबाद करते हो? मैं यह लताड़ लगाकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था? मैं सोचने लगता- क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी ज़िंदगी खराब करूँ! लेकिन घंटे-दो घंटे बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता। प्रातःकाल उठना, छह बजे मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर पढ़ने बैठ जाना। छः से आठ बजे तक अंग्रेज़ी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढ़े तीन बजे स्कूल से वापस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छह तक ग्रामर, आधा घंटा हॉस्टल के सामने टहलना, साढ़े छह से सात तक अंग्रेज़ी कम्पोजीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध विषय, फिर विश्राम। मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। मैदान की वह सुखद हरियाली हवा के वह हल्के हल्के झोंके, फुटबॉल की उछल-कूद, कबड्डी के वे दाँव-घात, बॉलीबाल की वह तेज़ी और फुरती मुझे खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबिल वह आँख फोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती, और फिर भाईसाहब को नसीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके सामने से भागता, उनकी आँखों से

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

8.4.24

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-2 बड़े भाई साहब') लेखक-प्रेमचंद

दूर रहने की चेष्टा करता। कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो।

इस प्रकार बच्चो! लेखक अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल तो बना लेता था लेकिन पढ़ाई में मन न लगने के कारण वह अपना ध्यान खेल की ओर ही लगाए रखता था। अब हम कुछ कठिन शब्दों के अर्थ जान लेते हैं;— शब्दार्थ:—

(क) हाशियों- किनारा
(ख) शालीनता- विनम्रता
(ग) निगरानी- देखरेख
(घ) अध्ययनशील- पढ़ाकू
(ङ) सामंजस्य- तालमेल
(च) मसलन- उदाहरणार्थ
(छ) इबारत- लेख
(ज) चेष्टा- कोशिश
(झ) कंकरिया- छोटे-छोटे पत्थर
(ञ) घोंघा- मूर्ख
(ट) लताड़- डाँट
(ठ) बूते- बल
(ड) अमल करना- पालन करना
(ढ) दाँव- पारी
(ण) नसीहत- सलाह
(त) साये- परछाईं।

अब बच्चो, पाठ को हम आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं—

सालाना परीक्षा में बड़े भाई साहब फेल हो गए, और मैं श्रेणी में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच केवल दो साल का अंतर रह गया था। लेखक के मन में आया कि वह भाई साहब को आड़े हाथ ले परन्तु उन्हें दुखी देखकर उन्होंने इस विचार को त्याग दिया। वह फिर से खेल-कूद में व्यस्त हो गए। भाई साहब का वह रोब अब लेखक पर न रहा। एक दिन लेखक प्रातः का सारा समय बिताकर लौटे तब भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और उन पर टूट पड़े- देखता हूँ, इस साल पास हो गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है; मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़ों का नहीं रहा,

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Dt. 8.4.24
Pg. 5 B+

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-2 बड़े भाई साहब) प्रेमचंद

तुम्हारी क्या हस्ती है, इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। घमंड के कारण उसके परिवार का सर्वनाश हो गया।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं तक पढ़ेंगे। पाठ का अगला भाग हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य:- सभी छात्र पढ़ाए गए पाठ को दो-तीन बार पढ़ेंगे। मेरे द्वारा कराए गए कठिन शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।
सभी बच्चे शब्दकोश में से दस हिन्दी के शब्द और उनके अर्थ याद करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ - 5)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner